

ज्योति का ज्ञान

देख ज्योति तेरी ज्योति का, फैल रहा है ज्ञान ।

तुमने बदल दिया इंसान

तूने बदल दिया इंसान ।

खुद भी जागा, सब को जगाया, तूने जगा दिया स्वाभिमान।

तूने बदल दिया इंसान।

तुमने बदल दिया इंसान

ग्यारह अप्रैल हुई पैदाइश, सन अठारह सौ सताइस।

कलगुण धारा की यही नुमाइश, पिता गोविंद मा चिमना की ख्वाहिश ।

पुणे की धरती मुस्काए , ज्योतिवा को जान।

तूने बदल दिया इंसान।

तूने बदल दिया इंसान ।

बचपन में उठ गया मां की साया, लालन-पालन की जननी जाया।

समाज सेवा मन समाया, सब को पढ़ने का विधान बनाया।

महान विचारक समाजसेवी बन, जगत का किया कल्याण ।

तूने बदल दिया इंसान।

तूने बदल दिया इंसान।

तेरी महिमा जितनी गाएं, दिन दूनी कम पड़ती जाएं ।

ऊंच नीच छुआछूत मिटाएं, मानवता का पाठ पढ़ाएं।

तेरे ज्ञान के आगे चले ना, किसी का तीर कमान।

तूने बदल दिया इंसान।

तूने बदल दिया इंसान।

पाखंडवाद से बाधा पाखंडी, पाप श्राप और शतचंडी।

स्वर्ग नरक हथियार की झंडी, कोप अकाल कुचक्र है मंडी।

ऐसे झूठे अस्त्र-शस्त्र को , बना दिया शमशान।

तूने बदल दिया इंसान,

तूने बदल दिया इंसान ।

जो नर कभी ना कपड़ा पहने, और नारी ना पहने गहने।

बिन पानी और हवा के रहने, पाखंड वादियों का क्या कहने ।

सारी कुप्रथा को तोड़ तूने दीया सबको सम्मान।

तूने बदल दिया इंसान।

तूने बदल दिया इंसान ।

कब तक चलेगी यह बर्बादी, बाल विवाह पर रोक लगा दी।

विधवाओं की पुनः हो शादी, शूद्र वैश्य या हो स्वर्णादि ।

तेरे परिवर्तन की आंधी में, कितनों के उजड़ गए दुकान।

तूने बदल दिया इंसान तूने बदल दिया इंसान ।

दलित गरीब सब बना था अंधा, पाखंडियों का चल पड़ा धंधा ।

ज्ञान नहीं बुद्धि था मंदा, ज्योति ने जगाया ज्ञान का फंद।

पढ़ा लिखा कर नर पशु निरा को बना दिया तर्कवान।

तूने बदल दिया इंसान।

तुम्हें बदल दिया इंसान।

पहली ज्योति घर में ही जलाई, माता सावित्री को खूब पढ़ाई।

नारी शिक्षा की अलख जगाई, इन्हें पढ़ने का अधिकार दिलाई।

मनु वादियों के प्रपंच से, तुझे छोड़ना पड़ा मकान।

तूने बदल दिया इंसान ,

तूने बदल दिया इंसान।

शुद्रातिशुद्रों के लिए कन्याशाला, जिसका था तू ही रखवाला।

छीन गया घर का निवाला, सावित्री को सौंपा कार्यशाला।

तेरे अनुपम ज्योति के आगे मनुवादियों का टूटा गुमान ।  
तूने बदल दिया इंसान।  
तूने बदल दिया इंसान।

देख ज्योति तेरी ज्योति का फैल रहा है ज्ञान ।  
तूने बदल दिया इंसान।  
तुमने बदल दिया इंसान

खुद भी जागा सब को जगाया तू ने जगा दिया स्वाभिमान ।  
तूने बदल दिया इंसान ।  
तूने बदल दिया इंसान।

स्वरचित कविता  
देव जी सम्राट